IBO IB DIPLOMA PROGRAMME
PROGRAMME DU DIPLÔME DU BI
PROGRAMA DEL DIPLOMA DEL BI

M02/230/H(1)T

HINDI B – HIGHER LEVEL – PAPER 1
HINDI B – NIVEAU SUPÉRIEUR – ÉPREUVE 1
HINDU B – NIVEL SUPERIOR – PRUEBA 1

Monday 6 May 2002 (morning)
Lundi 6 mai 2002 (matin)
Lunes 6 de mayo de 2002 (mañana)

1 h 30 m

TEXT BOOKLET – INSTRUCTIONS TO CANDIDATES

- Do not open this booklet until instructed to do so.
- This booklet contains all of the texts required for Paper 1 (Text handling).
- Answer the questions in the Question and Answer Booklet provided.

LIVRET DE TEXTES – INSTRUCTIONS DESTINÉES AUX CANDIDATS

- Ne pas ouvrir ce livret avant d'y être autorisé.
- Ce livret contient tous les textes nécessaires à l'épreuve 1 (Lecture interactive).
- Répondre à toutes les questions dans le livret de questions et réponses.

CUADERNO DE TEXTOS – INSTRUCCIONES PARA LOS ALUMNOS

- No abra este cuaderno hasta que se lo autoricen.
- Este cuaderno contiene todos los textos requeridos para la Prueba 1 (Manejo y comprensión de textos).
- Conteste todas las preguntas en el cuaderno de preguntas y respuestas.

पाठांश क: बिरजू महाराज से मुलाकात

१. कथक आप के लिए क्या है ?
२. आपके सबसे प्रिय दोस्त कौन हैं ?
३. आप कैसे गृहस्थ हैं ?
४. अपने बाबा के बारे में बताइए ।
५ अपनी अम्मा की कौन सी नसीहत का पालन आप आज भी करते हैं ?
६. आपके परिवार का माहौल कैसा है ?
७. आपके पास तो फिल्म अभिनेत्रियाँ भी नृत्य सीखने आती होंगी ?
८. आजकल गुरु-शिष्या के बीच श्रद्धा और अनुराग विवाह तक आ पहुँचा है, क्या यह ठीक है ?

क. हमारे यहाँ छोटा-बड़ा, आदर, लिहाज़ जैसी बातें बहुत महत्त्व रखती हैं । आज तक पत्नी और हमने साथ बैठकर फ़ोटो नहीं खिंचवाई । कभी साथ फिल्म देखने तक नहीं गए । आज भी आपस में लाज आती है ।
ख. ऐसा नहीं होना चाहिए । लेकिन यदि शिष्य पूरी लगन, ईमानदारी से दायित्व पूरा करता है, गुरु के काम को और भी सुंदर बनाता है, तो प्रेम स्वाभाविक है । अच्छे शार्गिद को देख कर मेरे मन में चार नयी बातें आती हैं, ढीलाढाला शार्गिद हो तो मैं भी शिथिल हो जाता हूँ । अब अगर क़ुदरतन प्रेम हो जाए तो हो जाए । जहाँ तक शादी की बात है तो बग़ैर शादी के भी लोग जिंदगी बिता देते हैं ।
ग. हमारे बाबा पं. वृंदादीन जी ने पाँच हज़ार ठुमरियाँ लिखी थीं । वे वाजिदअली शाह के दरबार में थे । यह समझ लीजिए पैसा बरसता था । एकदम राजशाही थी हमारे घर में । अम्मा के समय में कर्ज़ा बहुत हो गया । चौदह बरस की उमर में हमें "संगीत भारती" में अध्यापक की नौकरी मिल गई । वहाँ से "भारतीय कला केन्द्र" चला गया और नृत्यनाटिकाओं का कंपोजीशन शुरू किया । "कथक केन्द्र" से तो चालीस साल तक जुड़ा हूँ ।
घ. कथक मेरा महबूब है । मेरी बीवी से भी ज्यादा खूबसूरत । मैं नृत्य में डूबा रहता हूँ ।
च. नृत्य ही मेरा दोस्त भी है । जहाँ तक भौतिक संसार की बात है, तो मेरी सबसे प्रिय दोस्त मेरी पोती रागिनी है । उससे मेरी गहरी दोस्ती है और लड़ाई भी चलती है । वह मुझे थपकी देकर सुलाती है और कुछ देर बाद अपनी उँगलियों से मेरी आँखें खोल कर पूछती है, "सो रहे हो न!"
छ. मैंने माधुरी को कथक सिखाया है । सेन फ्रांसिस्को में हुए कथक के वर्कशॉप में वे भी नृत्य सीखने आई । बड़ी श्रद्धा से सीखती हैं । संजय लीला भंसाली की "देवदास" फिल्म में माधुरी के एक डांस का नृत्य निर्देशन मैंने किया । "शतरंज के खिलाड़ी" फिल्म में मेरे निर्देशन में एक ठुमरी पर शाश्वती का नृत्य है ।
ज. मैंने ना तो कभी बच्चे संभाले, ना कभी राशन लाया, इसलिए जिंदगी भर गालियाँ पड़ती रहीं । वैसे एक ही चीज़ हो सकती थी, या तो मैं गृहस्थी में उलझ जाता या अपनी नृत्य साधना को अंजाम देता । अंदरूनी तौर पर पत्नी की मैं बहुत कद्र करता हूँ । यह जो मेरा घर है, जिस पर मुझे इतना गर्व है, वह पत्नी के प्रयासों का नतीजा है । उनके बिना घर, घर ना होता ।
झ. अम्मा ने एक ही बात कही थी कि बेटा चाहे जितनी मुसीबत हो, चाहे एक वक्त का खाना मिले ना मिले, पर अपने घुंघरुओं को बांध कर रियाज़ करना कभी ना छोड़ना । मैं आज भी अभ्यास करता हूँ ।

पाठांश ख: आप भी बचा सकती हैं प्रकृति को

भाग १:

से नो टू प्लास्टिक बैग्स जैसी बातें सिर्फ नारे नहीं हैं, बल्कि इनके पीछे छिपी है एक चेतावनी कि यदि हमने पॉलीथिन बैग का बहिष्कार नहीं किया, तो पर्यावरण संबंधी बड़े नुकसान उठाने पड़ सकते हैं ।

सड़कों पर धुआँ उगलती मोटर गाड़ियाँ, धनी आबादीवाले क्षेत्रों में फैल रहे वैध-अवैध रसायनों के अंश, अस्पताल में निकलनेवाला कचरा, सब कुछ तो खुले में ही डाला जाता है। यह कचरा नदियों का जल प्रदूषित कर गंदही फैलाता है और पर्यावरण को प्रदूषित करता है । इससे मानव समाज के अस्तित्व के लिए ख़तरा पैदा हो गया है । ख़तरे को भाँप कर इसकी रोकथाम के लिए कई स्तरों पर प्रयास किये जा रहे हैं। धुआँरहित उपकरणों और सीएनजी गैस वाले वाहनों का विकास इस दिशा में महत्त्वपूर्ण कदम है ।

भाग २:

सरकार के साथ-साथ आज कई ग़ैर सरकारी संगठन भी पर्यावरण की रक्षा में जुटे हुए हैं । उनकी कई परिजोयनाओं को सकार करने में महिलाओं की भूमिका महत्त्वपुर्ण हो गयी है । शहर ही नहीं, गाँव की महिलाएँ भी इन कार्यों में सक्रिय रूप से भाग ले रही हैं । हिमाचल प्रदेश के ऊना जिले को ही लें । इस जिले के छोटे से गाँव की लड़की चंचला है । जब उसके गाँव में *ऊर्जा पर्यावरण समूह* संस्था बायो गैस संयंत्र के लाभ बताने व इसे लगाने के तरीकों की जानकारी देने पहुँची, तब महिलाओं ने बहुत दिलचस्पी दिखाई । लेकिन चंचला के माता-पिता इसे लगाने के लिए तैयार नहीं हुए । उनका मानना था कि पशुओं का गोबर एकत्र कौन करेगा? फिर उसे संयंत्र में डाल कर उसकी देखभाल और रखरखाव की ज़िम्मेदारी कौन लेगा? चंचला तो शादी के बाद दूसरे घर चली जाएगी, पीछे से कौन यह सब संभालेगा? लेकिन चंचला को बायो गैस संयंत्र के फ़ायदे स्पष्ट नज़र आ रहे थे । वह इसको अमली जामा देने के लिए जुट गई । माता-पिता के विरोध के बावजूद उसने संगी-साथियों की मदद से बायो गैस संयंत्र लगाया । बाद में संयंत्र की उपयोगिता को माता-पिता ने सराहा भी ।

भाग ३:

पर्यावरण में महिलाओं की भूमिका की जब बात करें तो राजस्थान में पेड़ों को बचाने के लिए देवबनी की प्राचीन परंपरा को नहीं भुलाया जा सकता । देवबन घोषित क्षेत्र में वृक्षों को काटना वर्जित होता है । अत: देवबन क्षेत्र में ईंधन के लिए पेड़ों को काट कर नहीं बल्कि स्वयं टूट कर गिरनेवाली लकड़ियों, सूखे पत्तों, डालियों आदि को बटोर कर प्रयोग किया जाता है । हिमाचल प्रदेश में पंद्रह वर्षों से काम कर रही ग़ैर सरकारी संस्था *ऊर्जा पर्यावरण समूह* ने पाया कि पर्यावरण में महिलाओं की रुचि पुरुषों के मुकाबले कहीं ज्यादा होती है । गाँव में जब शौचालय बनाने की बात उठी, तो पुरुष पीछे हट गए, किंतु महिलाओं ने भरपूर योगदान दिया । इस योजना को जारी रखने का बीड़ा भी महिलाओं ने ही उठाया । १९८९-९० के बाद वहाँ एक हजार शौचालय बन चुके हैं । इसी तरह बायो गैस संयंत्र के फ़ायदे जानने के बाद इस ज़िले के सौ गाँवों में लगभग ८०० बायो गैस संयंत्र तैयार हैं । कारण स्पष्ट है, इससे समय और ईंधन की बचत के साथ बनी-बनाई खाद मिलती है, जिसका उपयोग खेती में किया जा सकता है ।

पाठांश गः दुर्घटना (नरेन्द्र कोहली)

मैं दफ़्तर जाने के लिए तैयार होकर बाहर निकला ही था कि मेरी पत्नी दौड़कर मेरे सामने ज़मीन पर घुटनों के बल पर ऐसे आ बैठी जैसे मुग़ल बादशाहों के सामने बैठा करते थे । उसने मेरे पैर भी पकड़ लिए। मैंने यह दृश्य आज तक केवल फ़िल्मों में ही देखा था । इसलिए इसे पत्नी का व्यवहार न मानकर उसका अभिनय ही माना । पर घर का बरामदा कोई मंच तो था नहीं। यहाँ अभिनय का कोई अर्थ नहीं था । या यह रिहर्सल मात्र है क्या? रिहर्सल का क्या है, उपयुक्त स्थान के अभाव में कहीं भी सम्पन्न हो जाती है । सो घर के बरामदे में ही सही ।

मैंने पूछा, "क्या बात है?"
"तुम्हें मेरी क़सम! मेरे सिर की क़सम!" वह बड़े मैलोड्रेमेटिक अंदाज़ में बोली । मैं डरा, कहीं फ़र्श पर सिर न दे मारे । बोली, "आज दफ़्तर साइकिल पर मत जाओ ।"
"क्यों?" मैंने अपनी भौचक स्थिति से उबरने का प्रयत्न किया, "साइकिल में पंक्चर है क्या?"
"नहीं!" उसकी आँखों में आँसू तैर आए, "मेरी बात को मज़ाक़ में मत टालो । मुझे अनाथ करने का प्रयत्न मत करो!"
मैं घबराया, "क्या बात है भई! कुछ मालूम भी तो हो"
"देखो!" उसने मुझे बड़ी करुण दृष्टि से देखा, जैसे उसने जिगर का सारा दर्द अपनी आँखों में उंडेल दिया हो, जिसके बारे में कहा गया है, 'सारे जहाँ का दर्द हमारे जिगर में है'। "मैंने तुम्हारा साप्ताहिक भविष्य पढ़ा है ।"
"तो क्या हुआ", मैंने कुछ और अटपटा कर पूछा, "क्या इस सप्ताह दफ़्तर से साइकिल के चोरी जाने का योग है?"
"नहीं", वह बोली, "तीव्रगामी वाहन से दुर्घटना का भय है ।"
"ओह!" मैंने इतना ही कहा, पर मन में पचासों बातें घूम गईं । किस युग में रहती है यह मेरी पतिपरायणा पत्नी ! यह साइकिल को भी "तीव्रगामी वाहन" मानती है । क्या अर्थ था इस वाक्य का? मैं तीव्रगामी वाहन पर चलूँगा तो दुर्घटना का भय है, या तीव्रगामी वाहन मुझ पर आ चढ़ेगा? यदि मैं दफ़्तर जाऊँ ही नहीं, घर में ही बैठा रहूँ तो कोई तीव्रगामी वाहन, जैसे आकाश पर उड़ता हुआ विमान मेरे घर पर गिर सकता है । विमान को मुझ पर ही गिरना है तो मैं दफ़्तर में ही जा बैठूँ । कम-से-कम मेरे घर का तो नुक़सान नहीं होगा ।

"दफ़्तर कैसे जाऊँ? पैदल?" मैंने पत्नी से पूछा ।
"नहीं नहीं" वह और भी घबरा कर बोली ।
"तो कैसे जाऊँ?"
"आज बस पर चले जाओ।" उसने नक़द साठ पैसे मेरी हथेली पर धर दिए। इस लक्ष्मीरूपी स्त्री को देख मेरे मन में आया कि काश! कहीं इसके मन में मेरी सुरक्षा के विचार से टैक्सी का ध्यान आया होता तो वह मेरी हथेली पर टैक्सी का किराया रख देती! मैं बस में चला जाता और पैसे बचते, उसमें कुछ चाय-वाय ...."

बस में बैठा तो तीव्रगामी वाहन की बात सोच थोड़ा-सा भय मन में जागा, पर फिर मैंने अपने तर्क करना शुरु किया। तीव्रगामी वाहन का क्या तात्पर्य? अरे ये बसें और कारें क्या तीव्रगामी वाहन हैं ? तीव्रगामी वाहन हैं सुपर सॉनिक विमान, राकेट, अंतरिक्ष यान!

पाठांश घः अपनी जड़ों की ओर वापसी

ब्रिटेन में बसे हिंदुओं की तीसरी पीढ़ी ने अपनी पहचान की तलाश में हिंदू पुनर्जागरण की लहर चलाई ।

लंदन - **उदाहरण** - - **४६** - हिंदू युवा महोत्सव ब्रिटेन के इतिहास में पहला मौका होगा जब देश भर के हिंदू युवा लंदन में महोत्सव के लिए एकत्र होंगे । इस महोत्सव में नाटक, वाद-विवाद के - **४७** - घरेलू हिंसा, मादक द्रव तथा आध्यात्मिक अनुशासन के ज़रिए जीवन व्यवस्थित करने जैसे मुद्दों पर विचार होगा ।

ब्रिटेन - **४८** - भारतीयों की पहली पीढ़ी के लिए धार्मिक रीति-रिवाज अनिवार्य क़वायद थे । - **४९** - उनकी युवा पीढ़ी त्यौहारों और कर्मकांडों में बड़ों के दबाव पर ही शामिल होती थी । लेकिन हाल के वर्षों में काफ़ी बदलाव आया है । नेशनल हिंदू स्टूडेंट्स फोरम की महासचिव नीश्मा शाह कहती है, “हम तीसरी पीढ़ी के ब्रिटिश नागरिक हैं और हम धर्म से वही ग्रहण करते हैं जो यहाँ हम जैसे जातीय अल्पसंख्यकों के लिए प्रासंगिक है । हम ब्रिटेन में एक हिंदू पुनर्जागरण ला रहे हैं । कई हिंदू युवा अपनी पहचान खो चुके हैं जबकि कुछ उससे ज़रूरत से ज्यादा जुड़े हैं । अपनी जड़ों को पहचान कर ही हम अपने अस्तित्व के बारे में आश्वस्त हो सकते हैं । तभी अपने मूल्यों और परंपराओं को भावी पीढ़ियों को सौंप सकते हैं । यहाँ के ५० विश्वविद्यालयों में फोरम के १६,००० से ज्यादा सदस्य हैं ।”

इसका मकसद ब्रिटेन के हिंदू युवाओं के लिए हिंदू पहचान बनाना है । शाह का कहना है, “हम हिंदू राष्ट्रवाद का प्रचार चाहते हैं, जहाँ सभी हिंदू - पंजाबी, गुजराती, दक्षिण भारतीय तथा इस्कॉन, स्वामी नारायण या ब्रह्म कुमारी के अनुयायी - एक ही झंडे तले एकत्र होंगे और साथ काम करेंगे ।

ब्रिटेन के राष्ट्रवादी हिंदू युवा ख़ुद को ब्रिटिश एशियाई कहलाने की जगह ब्रिटिश हिंदू कहलाना ज़्यादा पसंद करते हैं । लेकिन ये युवा आरएसएस या विहिप जैसा कट्टर दक्षिणपंथी संगठन बनाना नहीं चाहते । एक हिंदू युवा रवि रोशन कहते हैं, “हिंसक तरीके अपनाकर आरएसएस और अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद हिंदू धर्म को ही बदल रहे हैं । हालांकी ब्रिटिश हिंदू युवा हिंदू जीवन मूल्यों, परंपराओं और संस्कृति के प्रचार के लिए एक मज़बूत संस्था चाहते हैं लेकिन वे असहिष्णुता, हिंसा या नैतिकता के पहरुए नहीं बनना चाहते ।

तो ब्रिटेन के युवाओं के लिए हिंदू आखिर कौन है ? सविता भरोत के मुताबिक, “हिंदू धर्म एक जीवन शैली है । हम कुछ सिद्धांतों का पालन करते हैं - मसलन अपने कर्म को मनोयोग से करना, धर्म मनाकर बड़ों का आदर करना और अहिंसा तथा सहिष्णुता का पालन करना । हर रोज़ मंदिर जाना ज़रूरी नहीं है लेकिन जीवन में इन सिद्धांतों का पालन ज़रूर करना चाहिए।

महोत्सव - **उदाहरण** - सिर्फ़ शोधपत्र, स्टाल और नाटक - **५०** - नहीं, बल्कि कथा और यज्ञ - **५१** - ओर भी बहुत से हिंदू युवा आकर्षित हुए । रोशन कहते हैं, “ऐसा दृश्य आपको भारत में - **५२** - नहीं मिलेगा । पहले हिंदू युवाओं के सामने पहचान - **५३** - संकट आया । वे अपने धर्म के बारे में ज़्यादा जानते नहीं थे । - **५४** - आयोजनाओं - **५५** - हम अपने धर्म के बारे में ज़्यादा जान रहे हैं । हम कुछ रिवाजों - **५६** - चुनौती भी दे रहे हैं और महसूस कर रहे हैं कि वे किस तरह ब्रिटेन में हमारे जीवन के लिए प्रासंगिक हैं ।

ब्रिटिश हिंदू विशेषण हिंदू युवाओं को एक पहचान देगा और इसकी परिधि में गोरे-काले सभी आ जाएँगे । लेकिन अस्तित्व के संकट से जूझ रहे लोगों के लिए धर्म क्या एक सुरक्षित विकल्प है ?